❶ ओ३म्

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को
194वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव
एवं ऋषि बोधोत्सव की
हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 41, अंक 16 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 5 फरवरी, 2018 से रविवार 11 फरवरी, 2018
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द बोध दिवस
शिवरात्रि पर विशेष

शिवरात्रि और आर्य समाज

– डॉ. महेश विद्यालंकार

पर्व हमारी सांस्कृतिक चेतना के अभिन्न अंग हैं। पर्वों से जीवन में उल्लास, उत्साह, गति, संगति, चेतना एवं प्रेरणा मिलती है। परस्पर संगठन की भावना जाग्रत होती है। पर्व जीवन्त चेतना के प्रतीक हैं। भारतीय संस्कृति पर्वों से भरी-पूरी है। ऋतुओं, फसलों, महापुरुषों, धर्मगुरुओं, तीर्थों और विशेष घटनाओं के साथ पर्वों का गहरा सम्बन्ध है। इसलिए भारतीय जन-मानस पर्वों के आगमन की प्रतीक्षा में उत्सुक रहता है।

शिव रात्रि भरत का महान् पर्व है। इसका सम्बन्ध शिव जी की उपासना, व्रत एवं संकल्प से है। सभी धार्मिक-आस्था वाले इस को किसी न किसी रूप में महत्त्व देते हैं इसी दिन देवात्मा दयानन्द को आत्मबोध हुआ था। हृदय में सत्यज्ञान और धर्म का प्रकाश उदय हुआ था। जीव परिवर्तन की ओर मुड़ गया था। इसलिए आर्य समाज का शिवरात्रि के साथ विशेष एवं गहरा सम्बन्ध है। आर्य समाज के इतिहास में यह दिन सदैव स्मरणीय और वन्दनीय रहेगा। यह दिन सदैव स्मरणीय और वन्दनीय रहेगा। यह तिथि ही आर्य समाज के निर्माण का शुभारम्भ है। अतः

....आर्य समाज की रीति-नीति, पूजा-पद्धति, मान्यताएं, दर्शन, चिन्तन आदि अन्य मत-मतान्तरों व विचारधाराओं से अलग है। इसके मूल आधार में सत्य, धर्म, कर्म एवं बुद्धि है। इसमें अंधविश्वास, पाखण्ड, झूठ, मन्त्र-तन्त्र, जादू-टोना एवं रूढ़िवादिता आदि नहीं है। यह तो सत्य-सनातन वैदिक परम्परा का ही प्रचारक और प्रसारक रहा है। इसी कारण आर्य समाज पन्थ, मजहब, सम्प्रदाय आदि नहीं है। यह तो एक जीवन्त क्रांति है। आन्दोलन है। जीवन पद्धति है। सुधारक-चिन्तन है। इसमें किसी देवदूत, पैगम्बर और अवतार का स्थान नहीं है।.....

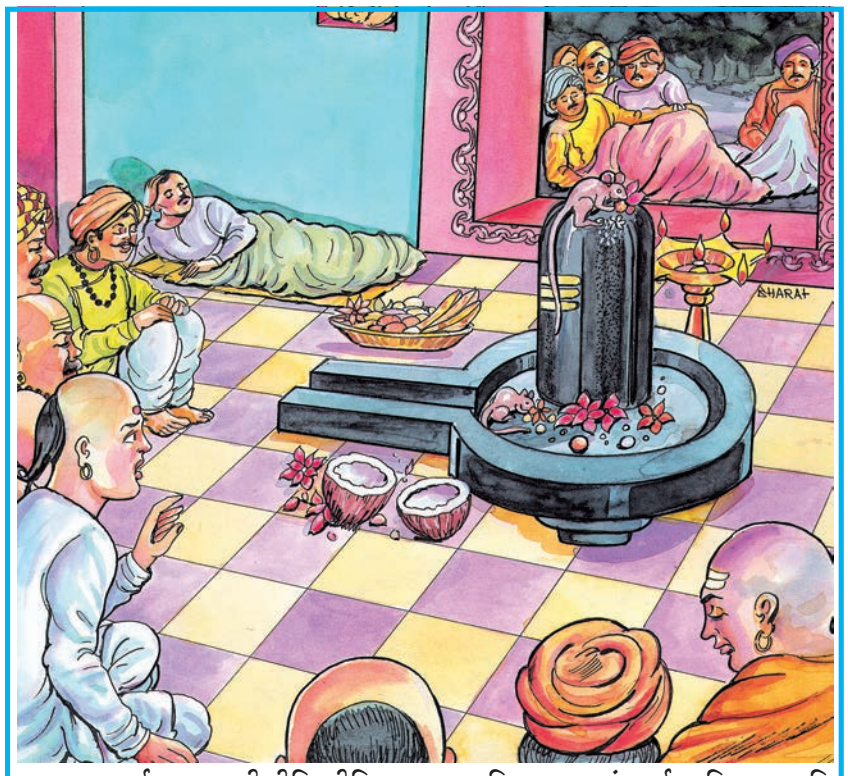

आर्य समाज के लिए यह दिन बोधोत्सव है। ज्ञान पर्व है। ज्योति और प्रकाश का महोत्सव है। जीवन परिवर्तन का अवसर है। व्रत और संकल्प का प्रभात है। निर्माण और चेतना की मङ्गल बेला है। इसी पुण्य तिथि पर महामानव दयानन्द के हृदय में सत्य का तूफान उठा था। सारी रात श्रद्धा, आस्था तथा निष्ठा से भरा हुआ सच्चे शिव के दर्शन के लिए एकटक लगाये हुए जागता रहा। जब कि सारा मन्दिर निद्रा की गोद में था। विचित्र घटना घटित हुई। चूहा शिव जी के नैवेद्य को निडर होकर खा रहा है। उस ऋषि का विश्वास, आस्था एवं श्रद्धा खण्डित हो उठी। मन नाना प्रकार के संकल्प-विकल्पों में डूब गया। अनेक प्रश्न उभरने लगे। शिवरात्रि का व्रत तोड़ दिया। यह सच्चा शिव नहीं हो सकता है? जो एक चूहे से भी अपनी रक्षा नहीं कर पा रहा है? वह हमारी रक्षा क्या करेगा? स्वामी जी सच्चे शिव के दर्शन और प्राप्तिके लिए निकल पड़े। अन्ततः सच्चे शिव के दर्शन और प्राप्ति में सफल हुए। इसी मूल घटना ने मूलशंकर को महर्षि दयानन्द के नाम से इतिहास और संसार में प्रसिद्ध किया।

– ***शेष पृष्ठ 8 पर***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्त्वावधान में
महर्षि दयानन्द सरस्वती
194 वाँ
जन्मोत्सव
फाल्गुन कृष्ण दशमी विक्रमी सम्वत् 2074 तदनुसार शनिवार, 10 फरवरी, 2018
दशहरा ग्राउण्ड
श्री निवासपुरी,
नई दिल्ली-65
ऋषि पर्व
रामलीला मैदान
रोहिणी, सै.7,
नजदीक पुलिस स्टेशन, दिल्ली-85
के अवसर पर
भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन
कार्यक्रम
यज्ञ : सायं 3.15 बजे
भजन संध्या एवं मार्गदर्शन : सायं 4.15 बजे से
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।
कार्यक्रम के पश्चात् प्रीतिभोज की व्यवस्था रहेगी।
निवेदक
धर्मपाल आर्य, प्रधान, 9810061763
विद्यामित्र ठुकराल, कोषाध्यक्ष, 9810072175
विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441
ओम प्रकाश आर्य, उप प्रधान, 9911155285
शिव कुमार मदान, उप प्रधान, 9310474979
मृदुला चौहान, उप प्रधान, 9810702760
मन्त्री : अरुण प्रकाश वर्मा, शिव शंकर गुप्ता, सुरेन्द्र आर्य, सुरेशचन्द्र गुप्ता, सुखवीर सिंह आर्य, वीरेन्द्र सरदाना
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.)
ओम प्रकाश वर्मा, प्रधान, 9899509928
सुशील आर्य, मंत्री, 9213560557
विजय गाबा, कोषाध्यक्ष, 9868454732
आर्य समाज, श्री निवास पुरी
ओम प्रकाश यजुर्वेदी, प्रधान, 9968264375
चत्तर सिंह नागर, मंत्री, 9211501545
ओमवीर सिंह, कोषाध्यक्ष, 9868803585
दक्षिणी दिल्ली, वेद प्रचार मण्डल
नरेश पाल आर्य, प्रधान, 7838913050
संजीव गर्ग, मंत्री, 9818530395
देवराज आर्य, कोषाध्यक्ष, 9818001813
आर्य समाज, रोहिणी, सै.7
सुरेन्द्र आर्य, प्रधान, 9811476663
जोगेन्द्र खट्टर, मंत्री, 9810040982
प्रत्त पाल भगत, कोषाध्यक्ष, 9968009433
वेद प्रचार मण्डल, उत्तरी पश्चिम दिल्ली

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से
महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं शिवरात्रि के
अवसर पर आयोजित
विशाल ऋषि मेला
फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी सम्वत् 2074 तदनुसार मंगलवार, 13 फरवरी, 2018
स्थान : रामलीला मैदान (अजमेरी गेट), नई दिल्ली-2
कार्यक्रम शुभारम्भ : दोपहर 1:30 बजे समापन : सायं 6:00 बजे
सार्वजनिक सभा : दोपहर 3.00 बजे से 6.00 बजे तक
मधुर भजन एवं संगीत
बच्चों द्वारा आकर्षक प्रस्तुतियाँ
सार्वजनिक सभा
"एक रूपीय यज्ञ"
इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा।
इस विशाल समारोह में आप दलबल, परिवार एवं इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।
कृपया ध्यान दें
विशाल ऋषि मेला
कृपया ध्यान दें
1. इस वर्ष प्रातःकाल के स्थान पर दोपहर 1:30 बजे से आयोजित होगा।
2. वृहद् स्तर पर एक रूपीय यज्ञ का प्रदर्शन होगा। यदि आपने सभा द्वारा आयोजित शिविरों में यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया है तो सम्मिलित होने के लिए श्री सन्दीप आर्य जी (9650183339) को अपना नाम लिखवाकर स्थान आरक्षित करवा लेवें।
3. कार्यक्रम के उपरान्त ऋषिलंगर अवश्य ग्रहण करें। – *सतीश चड्डा, महामन्त्री*

वेद-स्वाध्याय

ब्रह्मचारी की महिमा

ब्रह्मचारीष्णंश्चरति रोदसी उभे तस्मिन् देवाः संमनसो भवन्ति।
स दाधार पृथिवीं दिवं च स आचार्य तपसा पितर्ति।। - *अथर्व. 11/5/1*
ऋषिः ब्रह्मा।। देवता - **ब्रह्मचारी।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - ब्रह्मचारी =ब्रह्मचारी **उभे रोउदसी** = दिव् और पृथिवी दोनों लोकों में **इष्णन्** = ब्रह्म को खोजता हुआ, चाहता हुआ **चरति** = विचता है **तस्मिन्** = उस ब्रह्मचारी में **देवाः** = दिव्य शक्तियां **संमनसः** = अनुकूल मनवाली **भवन्ति** = हो जाती हैं, अत: **सः** = वह **पृथिवीं दिवं च** = पृथिवी और द्युलोक को **दाधार** = अपने अन्दर धारण करता है, एवं बाहर के भी इन दोनों लोकों को वह धारण करता है। **सः** = ऐसा ब्रह्मचारी **तपसा** = इस तप से **आचार्यम्** = अपने आचार्य को भी **पिपर्ति** = परितृप्त करता है, पूर्ण करता है, पालन करता है।

विनय- ब्रह्मचारी वह है जोकि ब्रह्म के लिए (महान् सत्यज्ञान के लिए या परमेश्वर-प्राप्ति के लिए) सब आचरण करता है, तपश्चरण करता है। वह उस सत्य की खोज के लिए कुछ उठा नहीं रखता है। इस स्थूल बाह्य जगत् अर्थात् पृथिवी में तथा सूक्ष्म अन्दर के ज्ञान-जगत् अर्थात् द्यौ में वह उस परम सत्य को खोजता हुआ फिरता है। उसे जहां भी कोई ब्रह्म अर्थात् सत्य-ज्ञान मिलता है तो वह फिर उसी (ब्रह्म) के अनुसार अपना आचरण करने लगता हे। घोर-से-घोर तपस्या करके भी वह उस ब्रह्म (सत्यज्ञान) के विपरीत चलने से अपने को बचाता है। ऐसे सच्चे ब्रह्मचारी में क्रमशः सब देवता, सब ईश्वरीय शक्तियां अनुकूल हो जाती हैं, जबकि वह अपना सर्वार्पण करता हुआ भी देवों के सत्य नियमों का पूर्णतः पालन करता है तो वे देव उससे एक मनवाले क्यों न हो जाएंगे? बाहर के अग्नि, वायु, आदित्य आदि देव उसके वाणी, प्राण-दर्शनेन्द्रिय आदि अन्दर के देवों के साथ समस्वर हो जाते हैं। इस प्रकार बाहर की पृथिवी और द्युलोक ही उसके अन्दर ठीक प्रकार धारित हो जाता है। सचमुच जो कुछ ब्रह्माण्ड में है वह सभी पिण्ड में भी है। ब्रह्मचारी अपने शारीरिक वीर्य की रक्षा द्वारा जहां स्थूल पृथिवीलोक को अपने में धारण करता है, वहां अपने आत्मवीर्य (तेज) की रक्षा द्वारा सब द्युलोक को भी अपने में समाये होता है। धन्य हैं वे ब्रह्मचारी, जो अपने आत्मवीर्य को अपने में अक्षुण्ण स्थापित रखते हुए इसे अधिक-अधिक जाग्रत करते जाते हैं। ऐसे ही लोगों के प्रताप से यह संसार-यह स्थूल (दृश्य) और सूक्ष्म (ज्ञानमय) संसार, यह पृथिवी और यह द्यौ-स्थित हैं। परम ब्रह्मचारी भगवान् जो वास्तव में सब जगत् के धर्त्ता हैं, इन्हीं वसु और आदित्य ब्रह्मचाारियों को साधन बनाकर जगत् का धारण कर रहे हैं। उस सर्वथा 'अनश्नन्', त्रिकाल में भोगवासना रहित, परमेश्वर से तेज को लेते हुए इन ब्रह्मचारियों में वह आत्म-वीर्य पैदा होता है, जिससे ये दैवी नियमों का ठीक पालन कर सकते हैं और अतएव जगत् में दैवी नियमों का ठीक संचालन होता है और सब जगत् स्थिर है। हे मनुष्यो! ब्रह्मचर्य की इस परम महिमा को देखो और अपनी परिपूर्ण शक्ति लगाकर महान् ब्रह्मचर्य की ओर अग्रसर होओ।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आर्यसमाज द्वारा घोषित
'अंधविश्वास निरोधक वर्ष-2018' पर विशेष

चन्द्र ग्रहण या धन ग्रहण

... हमारी ज्योतिष विद्या समय की गणना का वैज्ञानिक रूप है। जिसकी सराहना करने और समझने के बजाय लोग उसके अन्धविश्वास से भरे व्यापारिक रूप का ज्यादा समर्थन करते हैं। आखिर इस पाखण्ड की शुरुआत कहाँ से हुई? प्राचीन समय में राजा होते थे और राजाओं के बड़े-बड़े राजसी शौक थे, उनका कोई भी कार्य साधारण कैसे हो सकता है तो वे हर कार्य के लिए ज्योतिषियों से शुभ मुहूर्त निकलवाते थे। अब आज के समय में सभी के लिए यह ज्योतिष की सुविधा उपलब्ध है हर चौराहे पर ज्योतिष उपलब्ध है तो सभी इसका आनंद उठा रहे हैं, आज सभी राजा हैं।....

भारतीय समाचार चैनलों पर ज्योतिष के जानकर और बाबा सुबह-सुबह बैठते हैं वे स्वर्ग से नरक तक के, जीवन से मृत्यु तक के, सारे राज आधा-पौन घंटे में निपटा देते हैं। किस मार्ग से जाना है, किस मार्ग से नहीं। ऐसा कहते हुए उनके चेहरे पर एक आलोकिक आभा दिखाई देने लगती है। तब इन्हें देखकर लगता हैं देश को सरकार नहीं बल्कि ये ज्योतिष शास्त्री ही चला रहे हैं। आज किस रंग के कपड़े पहने, कैसे शुभ सूचना मिलेगी, किस दिशा में जाने से कार्य मंगलमय होंगे। किस यंत्र को घर में रखने से धन के भंडार भर जायेंगे। सब कुछ सुबह सवेरे हाथ मुंह धोने से पहले ही पता चल जाता है। लेकिन 31 जनवरी की शाम को लगभग 4 बजे से समस्त न्यूज चैनलों पर इन सभी की भरमार थी। घटना खगोलीय थी पर जिस तरीके से ये ज्योतिषी आम मनुष्य के जीवन पर उसके परिणाम और प्रभाव बता रहे थे उसे सुनकर लग रहा था आज चंद्रमा किसी खगोलीय घटना से नहीं बल्कि कथित ज्योतिषों से डरकर इधर-उधर छिप गया हो।

हालाँकि विज्ञान कहता है ये स्थिति तब उत्पन्न होती है जब सूर्य, पृथ्वी और चांद लगभग एक सीधी रेखा में आते हैं। इस स्थिति में सूरज की रौशनी चांद तक नहीं पहुंच पाती है और चांद पैनंबरा की तरफ जाता है तो वे हमें धुंधला सा दिखाई देने लगता है। वैज्ञानिक भाषा में पैनंबरा को ही ग्रहण कहा जाता है। दुनिया के लिए भले ही यह घटना अन्तरिक्ष विज्ञान से जुड़ी हो पर भारत के लिए यह किसी धार्मिक उत्सव से कम नहीं होती। लम्बे-लम्बे तिलक लगाये, महंगी-महंगी जैकेट पहने पंडित जी इसका असर बजट की तरह पेश कर रहे थे। बस अंतर इतना था, बजट में उच्च-माध्यम और निम्न वर्ग का ध्यान रखा जाता है यहाँ नाम और राशि के हिसाब से भय बांटा जा रहा था।

बता रहे थे कि पुराणों के अनुसार राहु ग्रह चन्द्रमा और सूर्य के परम शत्रु हैं। जब सागर मंथन से प्राप्त अमृत कलश प्राप्त हुआ तो राहु अमृत पीने के लिए देवताओं की पंक्ति में बैठ गया लेकिन सूर्य और चन्द्रमा के इशारे पर भगवान विष्णु राहु को पहचान गए और अमृत गटकने से पहले ही सुदर्शन चक्र से राहु का गला काट डाला। इस घटना के बाद से ही समय-समय पर राहु चन्द्रमा और सूर्य को खाने की कोशिश करता है लेकिन कभी खा नहीं पाता क्योंकि कटे सिर की वजह से राहु के मुंह में जाकर सूर्य और चन्द्रमा पुनः मुक्त हो जाते हैं। जबकि विज्ञान का मानना है कि जब सूर्य चन्द्र के मध्य पृथ्वी आ जाती है तो चन्द्रग्रहण लग जाता है।

आधुनिक ज्योतिष विद्या या लूट विद्या के अनुसार माना जाता है कि ग्रहण का प्रभाव काफी लम्बे समय तक रहता है और इसका प्रभाव कम करने के लिए स्नान, दान और धार्मिक कार्य करने के लिए कहा जाता है। इस दिन किए गए दान-पुण्य से मोक्ष का द्वार खुलता है, साथ ही ये भी बता रहे थे कि दान-पुण्य करने वालों को यह ध्यान रखना चाहिए कि जो भी करना हो वह सुबह 8 बजे से पहले कर लें। कोई सुजीत जी महाराज बता रहे थे कि इस चन्द्र ग्रहण का हर राशि पर अलग प्रभाव होगा। किस राशि के लोगों को कितना दान करना चाहिए वे बता रहे थे फला राशि वाले मंगल से संबंधित द्रव्यों गुड़ और मसूर की दाल का दान करें, इस राशि वाले का धन व्यर्थ व्यय होगा, मानसिक चिंता से बचने के लिए श्री सूक्त का पाठ करें और मंदिर में दिल खोलकर दान करें या इस राशि वाले शिव उपासना करें, ग्रहण के बीज मंत्र का जप करें। वरना रोगों में वृद्धि होगी, बने काम बिगाड़ जायेंगे, शारारिक कष्ट होगा, संतान सुख नहीं होगा आदि-आदि।

ये लोग हर एक अंधविश्वास फैलाने से पहले यह कहना नहीं भूल रहे थे कि शास्त्रों के दिशानिर्देश के अनुसार ये करना चाहिए वो करना चाहिए। लेकिन ऐसा झूठ और भय फैलाने का कौन सा शास्त्र आज्ञा देता है। वेद में तो ऐसा कुछ नहीं है? न गीता में न किसी उपनिषद में फिर वह कौन सा शास्त्र है? शायद यह इनका काल्पनिक शास्त्र होगा।

दरअसल हमारी प्राचीन ज्योतिष विद्या समय की गणना का वैज्ञानिक रूप है। जिसकी सराहना करने और समझने के बजाय लोग उसके अन्धविश्वास से भरे व्यापारिक रूप का ज्यादा समर्थन करते हैं। आखिर इस पाखण्ड की शुरुआत कहाँ से हुई? प्राचीन समय में राजा होते थे और राजाओं के बड़े-बड़े राजसी शौक थे, उनका कोई भी कार्य साधारण कैसे हो सकता है तो वे हर कार्य के लिए ज्योतिषियों से शुभ मुहूर्त निकलवाते थे। अब आज के समय में सभी के लिए यह ज्योतिष की सुविधा उपलब्ध है हर चौराहे पर ज्योतिषी उपलब्ध है तो सभी इसका आनंद उठा रहे हैं, आज सभी राजा हैं। लेकिन आज के समय में ज्योतिष विद्या का पूरी तरह से बाजारीकरण हो चुका है अब बहुत से पाखण्डी आपको डरा कर अपना उत्पाद आपको बेच रहे हैं। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार फेयर एण्ड लवली वाले आपको गोरा कर देने का दावा करते हैं।

इस ढोंग का सबसे बड़ा नुकसान यह है की इंसान यह भूल जाता है कि जीवन, होनी और अनहोनी, सुख और दुःख, कभी अच्छा तो कभी बुरा इन दोनों पहलुओं को लेकर आगे बढ़ता है। दूसरा एक नुकसान यह भी है कि यदि व्यक्ति से कोई गलती हो भी जाए तो वह भाग्य या ग्रहों को दोषी ठहरा देता है बजाय इसके कि वह उस पर आत्ममंथन करके उसके मूल कारण को समझे। जिससे भविष्य में उसी गलती के पुनरावृत्ति होने की सम्भावना बढ़ जाती है। मतलब ऐसे किसी भी नियम को स्थापित करने के पीछे मुख्य रूप से दो बातें प्रभावी होती हैं, पहली-भय और दूसरी-लोभ या लालच। धर्म के नाम इन दोनों बातों का समावेश कर दिया गया है।

इस सत्य से शायद ही कोई इंकार करे कि हम जब भी किसी संकट में घिर जाते हैं तो अपने से सक्षम का सहारा तलाशते हैं, विशेष रूप से अपने से बड़े का। दैवीय शक्ति की मान्यता के पीछे भी यही उद्देश्य रहा होगा कि जब इन्सान किसी मुसीबत में घिर जाये तो उसका स्मरण करके खुद में एक तरह का विश्वास पैदा कर सके। लेकिन इस मान्यता को भी धार्मिक कर्मकांडियों ने अपनी गिरफ्त में लेकर लोगों के सामने भगवान का भय जगाना शुरू कर दिया। मुसीबतों से बचाने का कारोबार करना शुरू कर दिया। हर समस्या का समाधान निकालना शुरू कर दिया। अशिक्षितों की कौन कहे जब पढ़े-लिखे लोग ही ढ़ोंगियों के चक्कर में फंसकर धर्म को रसातल की ओर ले जाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रहे हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय द्रष्टि से बनाई गई मान्यताओं को अन्धविश्वास के सहारे पल्लवित-पुष्पित करने लगे। आज हालत ये है कि अधिसंख्यक व्यक्ति या तो घनघोर तरीके से धर्म के कब्जे में हैं। इसके लिए हमें अंध-विश्वास से बाहर आना होगा, अंध-श्रद्धा से बाहर आना होगा, अंध-व्यक्ति से बचना होगा। आने वाली पीढ़ी को उन्नत ज्ञान वेद का मार्ग समझाना होगा वरना अंधविश्वास के इस जाल से न धर्म बचेगा न विज्ञान। - ***सम्पादक***

मुसलमानों का दूसरा मुल्क – क्या अब इसी से होगी शान्ति ... ?

....हमेशा की तरह पिछला इतिहास यही कहता है कि पहले अपने लोगों को मजहब के नीचे एकत्र करो जनसँख्या का अनुपात बढ़ाओ और फिर नये देश की मांग करो। लेकिन इसके बाद क्या करना है इस विषय से लगभग समूचा इस्लाम अछूता सा दीखता है। वरना 50 से अधिक मुल्कों में कहीं भी लोकतंत्र और आधुनिकता का न होना यही सवाल क्या मुस्लिम समाज की बौद्धिक शक्ति पर खड़ा नहीं होता?

.....जब मुफ्ती नासिर इस्लाम के नाम पर अलग देश की मांग कर रहे थे उसी दौरान अफगानिस्तान में इस्लाम के नाम पर दक्षिणी यमन के अदन शहर में अलगाववादियों ने सरकारी इमारतों पर कब्जा कर लिया। यहां राष्ट्रपति अब्दरब्बुह मंसूर हादी की सेनाओं और अलगावादियों के बीच संघर्ष चल रहा था।.....

कहते हैं एक इन्सान के सोचने का ढंग उसका पारिवारिक परिवेश तय करता है या फिर स्कूल में मिली शिक्षा, या फिर उसका समाज और उसके धर्म ग्रन्थ। अगर इन सभी जगह अलगाव और नफरत की शिक्षा मिल रही हो तो स्वाभाविक है; इन्सान अलगाववादी ही होगा। हाल ही में मुस्लिम पर्सनल बोर्ड के उपाध्यक्ष और डिप्टी ग्रैण्ड मुफ्ती नासिर उल इस्लाम का कहना है कि समय आ गया है कि हिन्दुस्तान में रहने वाले मुसलमान अपने लिए अलग देश की मांग करें। जो लोग कहते हैं कि यह देश हिन्दुओं के लिए है तो फिर ठीक है। हिन्दुस्तान का एक और हिस्सा कर दीजिए और हिन्दुस्तान के मुसलमानों को एक और मुल्क बनाने दीजिए। मुफ्ती नासिर यही नहीं रुके उन्होंने आगे कहा कि ''जो फैसला उस समय मुसलमानों ने लिया वह सही फैसला था। हिन्दुस्तान में उनके लिए कोई जगह नहीं है किसी भी जगह उनकी नुमाइंदगी नहीं है। उनका कहना था, उस समय सिर्फ 17 करोड़ मुसलमानों ने पाकिस्तान बनाया। अगर हिन्दुस्तान में मुसलमानों की हालत ऐसी ही रही तो फिर आज 20 करोड़ मुसलमान दूसरा देश क्यों नहीं बना सकते?

हालाँकि मुफ्ती नासिर के इस बयान का खण्डन करते हुए पीडीपी के नेता और मंत्री चौधरी जुल्फिकार अली ने कहा कि ये बयान उनकी निजी सोच हो सकती है। उनका कहना था कि हिन्दुस्तान को बनाने में मुसलमानों का भी हाथ है और यह देश जितना दूसरों का है उतना ही मुसलमानों का भी है। साथ ही कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के राज्य सचिव और विधायक यूसुफ तारिगामी ने मुफ्ती नासिर के बयान पर टिप्पणी करते हुए कहा कि उनका बयान गैर–जिम्मेदाराना है। उनका कहना था, ''मैं ऐसे लोगों से एक सवाल पूछना चाहता हूं कि 70 साल पहले पाकिस्तान नाम का एक अलग देश वजूद में आया। धर्म की बुनियाद पर एक अलग देश बनने से मसले कम हुए या और भी पेचीदगियां पैदा हुई?''

पूरे बयान में मुफ्ती नासिर की एक बात सबके समझ से परे है कि जो फैसला उस समय मुसलमानों ने लिया वह सही फैसला था। हिन्दुस्तान में उनके लिए कोई जगह नहीं है। उन्होंने 1947 के फैसले को जायज ठहराते हुए ये बात कही। लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि जो फैसला उनके लीडरों ने लिया उन्होंने उसका पालन क्यों नहीं किया? क्यों मुसलमानों के लिए बनाये गये देश पाकिस्तान नहीं गये?

असल में यह एक गंभीर प्रसंग है जिसे आम मुसलमान मन ही मन लेकर जीता है। नवम्बर 1990 में नेशनल रिव्यू की एक संस्था ने मुसलमानों के भय के कुछ कारणों को गिनाया था। उन्होंने लिखा था कि मुसलमान हजार वर्षों में एक ही अवसाद की स्थिति से गुजर रहे हैं, लड़ाई लड़ी, धर्म प्रचार किया। लोगों को छल–बल से धर्मान्तरित किया। अपनी संख्या बढाई। किन्तु हर बार स्वयं को बिना किसी ज्ञात कारण के सबसे नीचे के पायदान पर पाया। मुस्लिम देशों के पास सबसे अधिक कट्टरपंथी हैं और विश्व के सबसे कम लोकतंत्र। केवल तुर्की (और कुछ अवसरों पर पाकिस्तान) ही पूरी तरह लोकतांत्रिक है। परन्तु वह व्यवस्था भी काफी कमजोर है। अन्य सभी स्थानों पर सरकार के मुखिया ने जबरन सत्ता प्राप्त की है फिर वह स्वयं अपने द्वारा हो या अन्य के माध्यम से इन समस्याओं के बाद यह तर्क सही ठहराया जा सकता है कि मुसलमान ही मुसलमान के सबसे बड़े शत्रु हैं।

हमेशा की तरह पिछला इतिहास यही कहता है कि पहले अपने लोगों को मजहब के नीचे एकत्र करो जनसँख्या का अनुपात बढ़ाओ और फिर नये देश की मांग करो। लेकिन इसके बाद क्या करना है इस विषय से लगभग समूचा इस्लाम अछूता सा दीखता है। वरना 50 से अधिक मुल्कों में कहीं भी लोकतंत्र और आधुनिकता का न होना यही सवाल क्या मुस्लिम समाज की बौद्धिक शक्ति पर खड़ा नहीं होता?

जब मुफ्ती नासिर इस्लाम के नाम पर अलग देश की मांग कर रहे थे उसी दौरान अफगानिस्तान में इस्लाम के नाम पर दक्षिणी यमन के अदन शहर में अलगाववादियों ने सरकारी इमारतों पर कब्जा कर लिया था। यहां राष्ट्रपति अब्दरब्बुह मंसूर हादी की सेनाओं और अलगावादियों के बीच संघर्ष चल रहा था। ठीक इसी समय अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में हुए आत्मघाती हमले में 100 लोग मारे गये जबकि 158 अन्य घायल हुए। तो तुर्की के लड़ाकू विमानों ने सीरिया के एक हिस्से पर यह कहकर बमबारी शुरू की कि हम अकेले नहीं हैं, अल्लाह हमारे साथ है और हम अपने अभियान में जल्द ही सफल होंगे। इस्लाम के नाम पर बने देश पाकिस्तान का हाल किसी से छिपा नहीं है। ये सभी उदाहरण वर्तमान समय के हैं न कि ऐतिहासिक। इसमें गौर करने वाली बात यह है कि मुफ्ती नासिर ने कहा भारत में इस्लाम सुरक्षित नहीं है तो मुफ्ती नासिर यह जरूर बतायें कि किस इस्लामिक देश में मुसलमान सुरक्षित है?

यमन तबाह, लीबिया तबाह, इराक तबाह, सीरिया का हाल सबके सामने है। इसके बाद अफगानिस्तान को ले लीजिये अकेले जनवरी माह में इस्लाम के नाम पर सेंकड़ों लोग मारे गये। ईरान में मुल्ला मौलवियों की सत्ता के खिलाफ लोग सड़कों पर हैं। कश्मीर में तो मुसलमान बहुसंख्यक हैं कई जिलों में तो अन्य मत के लोग न के बराबर हैं वहां इस्लाम भी है, मस्जिद भी। सभी अधिकार उनके हाथों में है क्या वहां शांति है? यूरोप से अमेरिका तक नाइजीरिया से लेकर अदन तक हर जगह हाहाकार मची है। क्या यह सभी उपरोक्त उदाहरण मुफ्ती नासिर के लिए काफी नहीं हैं? शायद नासिर मुफ्ती के इस बयान के बाद उन तमाम तथाकथित नकली धर्मनिरपेक्ष समाज को सच का आईना देखने को मिला है जिन्होंने भारत के बंटवारे का बेहद आधारहीन आरोप हिन्दूवादी सोच पर अब तक थोपने का कुत्सित प्रयास किया था। नासिर मुफ्ती के इस बयान के बाद एक बार फिर से धर्मनिरपेक्ष धड़ा पूरी तरह से खामोश है और हिन्दू दलों के छोटे छोटे बयानों को भी ब्रेकिंग बनाने वाले तमाम अन्य लोग भी निष्क्रिय अवस्था में दिख रहे हैं।

– ***राजीव चौधरी***

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर–घर–यज्ञ, हर–घर–यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर–परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।– ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

बोध कथा — घूंघट के पट खोल रे, तोहे पिया मिलेंगे

एक कमरे में एक सज्जन बैठे थे। दीवार पर घडी़ लगी हुई थी। लगातार चलती हुई यह टकटक कर रही थी। वह सज्जन इसकी टकटक को सुन रहे थे। बाहर गली में ऊँची ध्वनि से बाजे बजने लगे। इस सज्जन को घड़ी की ध्वनि आनी बन्द हो गई। भयभीत होकर उसने नौकर को बुलाकर कहा–''देखो तो, सम्भवत: यह घड़ी चलनी बन्द हो गई है। इसकी ध्वनि सुनाई नहीं पड़ती।''

नौकर ने ध्यान से घड़ी को देखा। वास्तविक बात को समझकर बोला–''घड़ी बन्द नहीं हुई। बाहर की ध्वनि इतनी अधिक है कि इसकी टकटक सुनाई नहीं देती।''

मनुष्य का यह मन एक कमरा है। इसके अन्दर परमात्मा की ध्वनि घड़ी की तरह लगातार टकटक करती है, लगातार बोलती है। किन्तु बाहर की इच्छाओं और वासनाओं के जो बाजे बजा रखे हैं, उन्होंने इस ध्वनि को ही दबा दिया है। अन्दर के पट तब खुलें, जब बाहर के पट बन्द हों। बाहर के पट बन्द करने से ही घूँघट के पट खुलते हैं, तब प्रियतम प्रभु का दर्शन होता है। तब उनकी ध्वनि सुनाई देती है।

– *महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती*
साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

19वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

वैदिक संस्कारों से युक्त आर्य परिवारों के निर्माण की संकल्पना है आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन

उच्च शिक्षित, उच्च आयवर्गीय आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन सम्पन्न

आर्यसमाज के विवाह सम्बन्धी विचार महर्षि दयानन्द के वैदिक चिंतन का साक्षात् स्वरूप है - धर्मपाल आर्य, प्रधान

नई दिल्ली 4 फरवरी। ''वैदिक संस्कारों से युक्त आर्य परिवारों के निर्माण ही आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य है। इससे वैदिक विचारधारा और अधिक गति से समाज में बढ़ेगी।'' उक्त विचार 19वें आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में बोलते हुए मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी चेयरमैन एम. डी.एच. ने व्यक्त किये। महाशय जी ने अपनी दिनचर्या को वक्तव्य करते हुए कहा कि मैं सियालकोट में पैदा हुआ वहीं रहा। वहां मैं रोज सुबह 4 बजे टहलने जाता था तो एक आवाज सुनाई पड़ती थी उठ जाग मुशफिर भोर भई। जो जागत है सो पावत है जो सोवत है सो खोवत है। यानी जो जाग गया वह जीवन में कुछ बन जाएगा। मेरा जीवन सदा यज्ञ मय रहा है मेरी जिन्दगी में यदि यज्ञ न हो तो जीवन में कुछ न हो मैं आज भी सुबह सवा 4 बजे उठ जाता हूं पार्क में जाकर भ्रमण करता हूं, योगा करता हूं, डम्बल करता हूं। मेरा कहने का तात्पर्य यह कि अपनी दिनचर्या को ईमानदारी से निभाने से आपकी चर्या ही बदल जाएगी। जैसा बीजोगे वैसा ही काटोगे।'' उन्होंने विवाह परिचय सम्मेलन को आयोजित करने वाले सभी कार्यकर्त्ताओं एवं अधिकारियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि कार्यक्रम के प्रचार के लिए राष्ट्रीय समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित करवाने की आवश्यकता है, इस दिशा में कार्य किया जाना चाहिए।

आर्य समाज जनकपुरी बी-2 ब्लाक नई दिल्ली में आयोजित 19वें सम्मेलन में श्री धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि ''आर्यसमाज के विवाह सम्बन्धी विचार महर्षि दयानन्द के वैदिक चिंतन का साक्षात् स्वरूप है। विवाह में जन्म पत्री मिलान, मांगलिक दोष इत्यादि से समाज में अनेकों भ्रांतियां फैली हैं।, इन्हें दूर करना होगा।' उन्होंने आगे कहा कि 'आज के इस कार्यक्रम की प्रमुख विशेषता यह है कि प्रथम बार उच्च शिक्षित उच्च आर्य वर्ग के आर्य युवक-युवतियों के लिए यह सम्मेलन विशेष रूप से आयोजित किया गया है जो काफी उत्साहवर्द्धक है।

- शेष पृष्ठ 6 पर

दीप प्रज्ज्वलित करके परिचय सम्मेलन का शुभारम्भ करते महाशय धर्मपाल जी, चेयरमैन, एम.डी.एच.। साथ में हैं सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा, पचिय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्डा, दिल्ली संयोजक श्री एस. पी. सिंह, आर्यसमाज जनकपुरी बी ब्लॉक, नई दिल्ली के प्रधान श्री कृष्ण कुमार बवेजा एवं श्री वी.के. खट्टर। इस अवसर पर आत्म विश्वास के साथ अपना परिचय देते प्रतिभागी।

सम्मेलन स्थल पर तत्काल पंजीकरण के लिए सेवाएं देते कार्यकर्ता। प्रतिभागियों के साथ अधिकारीगण। जो प्रतिभागी नहीं आ सके उनके अभिभावकों ने दिया परिचय।

पुस्तक परिचय

बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश

आर्य समाज की विचारधारा को विशेष रूप से बच्चों में प्रचारित-प्रसारित करना आवश्यक है। इस कड़ी में वैदिक धर्म एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की मान्यताओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश का छोटा रूप बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित किया है, ताकि इसे पढ़कर बच्चे मूल सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें। सत्य-असत्य का निर्णय कर आजीवन सत्य की राह पर चलें। अन्धविश्वास, पाखण्ड आदि से दूर रहें। बच्चों के साथ-साथ आम जन भी इसे पढ़कर महर्षि दयानन्द के राष्ट्रवादी और वैदिक विचारों से अवगत होंगे।

आप भी इस अनमोल रत्न को अपने ईष्टमित्रों-रिश्तेदारों को भेंट कर सकते हैं। एक प्रति मात्र 10 रुपये की है और 100 प्रतियाँ केवल 700/- रूपये में है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में ईस्ट आफ कैलाश एवं रानी बाग में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

चन्द्र आर्य विद्यामन्दिर ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यक्रम यज्ञ प्रशिक्षण के अन्तर्गत छात्राओं को 1-2-3 फरवरी, 2018 प्रशिक्षण प्रदान किया गया। छात्राओं ने पूर्ण उत्साह के साथ यज्ञ प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया। - *नितिज्ज चौधरी, चेयरमैन*

आर्य समाज रानीबाग के अन्तर्गत संचालित आर्य गुरुकुल के विद्यार्थियों एवं कन्या गुरुकुल सैनिक विहार के विद्यार्थियों के लिए यज्ञ प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 6 से 8 फरवरी तक सैनिक विहार के निकट स्वामी श्रद्धानन्द उद्यान में किया गया। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने दोनों स्थानों पर यज्ञ प्रशिक्षण दिया। श्री सत्य प्रकाश ने प्रशिक्षण व्यवस्थाओं में सहयोग प्रदान किया। - *जोगेन्द्र खट्टर, मन्त्री*

मातृशक्ति

स्नान

प्रात: भ्रमण, दांतों की सफाई के बाद स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक है स्नान। शरीर को स्वच्छ, पवित्र व निरोग रखने के लिये प्रतिदिन स्नान करना परम आवश्यक है। स्नान करने से शरीर स्वच्छ हो जाता है। रोम छिद्र खुल जाते हैं। रात्रि को निद्रा के समय जो शरीर में उष्णता तथा आलस्य बढ़ जाता है अथवा दिन भर के परिश्रम से जो शरीर और मस्तिष्क में गरमी व थवावट आ जाती है, स्नान करने से यह सब दूर हो जाते हैं। जल वास्तव में बल, शक्ति, आरोग्यता आदि दैवी शक्तियों का भण्डार है। अत: स्नान, खान-पान आदि में इसका यथायोग्य उपयोग करने से शरीर के सब रोगों और निर्बलताओं को दूर कर मनुष्य को अमृत अर्थात् दीर्घजीवी बना देता है। इसीलिए अथर्ववेद में कहा है-

अप्स्वन्तर-ममृत-मप्सु भेषजम्।

अर्थात् -जल के अन्दर सब तरह के रोगों को दूर करने की औषधि तथा अमृत विद्यमान है। वेद तो यहां तक कहता है-

भिषग्भ्यो भिषक्तरा आप:।

अर्थात् -जल सम्पूर्ण औषधियों की परम औषधि है। अत: प्रात: ठण्डे जल से स्नान करना अपने अन्दर अमृत का संचार करना है। स्नान करने से जहां शारीरिक लाभ होते हैं, वहीं चित्त में भी शान्ति तथा सत्यगुण की वृद्धि होती है जिससे ईश्वरोपासना, सत्संग, स्वाध्याय आदि में मन भली प्रकार लगता है स्नान से शरीर में अपूर्व बल तथा शक्ति का संचार होता है ओर दूषित द्रव्य शरीर से बाहर निकल जाते हैं। स्नान से तेज, बल आरोग्यता और स्फूर्ति की वृद्धि होती है। पाचन शक्ति तीव्र होती है। बुद्धिमानों का कहना है, जो नित्य नियमपूर्वक प्रात: स्नान करता है उसे निम्न गुणों की अवश्य प्राप्ति होती है- रूप, कान्ति, तेज, बल, पवित्रता, दीर्घआयु, आरोग्यता, स्थिरता अर्थात् चंचलता का नाश, स्वप्न अर्थात् अधिक निद्रा की निवृत्ति, यश, कीर्ति सात्त्विकता और सूक्ष्म मेधा बुद्धि।

हृदय और फेफड़े आदि शरीर के कोमल अंग दृढ़ होते हैं। शरीर में आलस्य नहीं रहता। मन की मलिनता दूर होती है। चित्त सदा प्रसन्न रहता है। काम करने में उत्साह होता है। स्नान करने से भीतर की स्वाभाविक ऊष्णता भीतर ही रह जाने से जठराग्नि प्रदीप्त होती है। रक्त का प्रवाह ठीक होता है। वीर्य, आयु, शक्ति तथा पुरुषार्थ की वृद्धि होती है। ज्ञान तन्तुओं में जागृति तथा नवचेतना का संचार होता है। अत: हमें स्नान करने में कभी आलस्य नहीं करना चाहिए।

- आचार्य भद्रसेन
साभार: आदर्श गृहस्थ जीवन

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

अमेरिका आर्य समाज ने मनाया भारतीय गणतन्त्र दिवस

अमेरिका आर्य समाज ग्रेटर ह्यूस्टन में आर्यो ने मनाया गणतन्त्र दिवस के शुभ अवसर पर हॉस्टन के सामने लॉन में आर्यजन इकट्ठे हुए और बच्चों के साथ भारतीय गणतन्त्र दिवस को खुशी और सम्मान के साथ मनाया। साथ ही भारतीय राष्ट्रगीत वन्देमातरम् और सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा और कई देश भक्ति गीतों की मनोरंजक प्रस्तुति से आयोजन को भारतीय गणतंत्र के रंग ओर जोश से भर दिया।

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

53 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

Veda Prarthana - 30 A

God Soul and Prakrti (Traitwad)

बालादेकमणीयस्कमुतैकं नेव दृश्यते।
ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया।।
Baladekamaniyaskam ut ekam neva drshyate.
Tatah pari shvajiyasi devata sa mam priya.
(Atharva Veda 10:8:25)

Continue from last issue

The soul is eternal, it has always existed, it was never born and never dies. The joining of the soul with a physical body is birth, and the separation from the body is death. The physical body grows and perishes; following this the soul migrates to a new physical body. Thus, the soul comes and goes i.e. it changes physical bodies. This cycle of birth, death and rebirth will continue until the soul has attained moksha the infinite bliss (see below). As stated before, the body made of prakriti by itself is inert, where as the soul is the conscious entity. However, soul most of the time lacks one characteristic that is anand i.e. pure bliss or joy. While the soul under usual circumstances in most persons has an element of joy or happiness but it is admixed with unhappiness and sorrow. The joy or happiness brought about by things made of prakriti such as wealth, comfort items, physical beauty etc, is always transient, incomplete, admixed with unhappiness and sorrow as well as never brings satiety, fulfillment and there is always unquenchable thirst for more. The third eternal thing is God. God is Supreme Consciousness and Supreme Bliss. He is the Creator and Maintainer of the universe and causes its dissolution. God has no shape, form, or dimensions nor does God occupy any space. Like the soul God is invisible and cannot be measured by scientists like other physical objects made of prakriti. Omnipresent God is present everywhere in each and every particle of the universe and beyond. God is endless as well as God is larger than the largest and smaller than the smallest. God being larger than the largest entity envelops eveything in the universe including the earth, planets, stars and galaxies. God transcends all physical objects. God being a conscious entity can enterr/penetrate things made of prakriti to activate them and being smaller than the smallest God is present even inside our soul. Therefore, God is called sarvavyapyaka i.e. omnipresent, an entity that pervades inside each and every particle and place in the universe including our soul. He is aware of everything that is going on even in the most secret recesses of our minds because He resides even inside our souls (also see mantra #20). God as the Karmaphaldata-Final Judge in the Universe gives appropriate awards to all of us depending upon our past and present karmas- deeds. As such, God the Supreme Bliss showers and fills up his true devotees with bliss. Once a devotee has attained God realization and true blisss, things made of prakriti seem insipid and give him/jer no joy. Also, the desire to acquire more and more material goods for physical enjoyments is quenched and extinguished. The bliss obtained in the conscious company of God is pure, complete and fulfilling unlike those obtained from prakriti (see above paragragh). From then on God becomes the dearest entity in the devotee's life. While all other types of love a human being has such as for parents, spouse, children and friends have their perspective role in one's life journey, they become secondary to one's love for God.

Therefore, O human beings! Remember that God created the universe to provid souls a place to move closer to Him and eventually attain bliss. It is only in the context of the univrse (prakriti) that a person can live and grow and learn right from wrong. Karma and the exercise of free will are only possible within the setting of the universe. Therefore, utilize the things made of prakriti as the means but do not get attached to them or make gathering them the goal of your life, they will not provide bliss or lasting happiness. Your utmost attachment and love should be for God who is the Ultimate Source and Storehouse of Bliss, Knowledge, Wisdom and Strength as well as the provider of an element of the same to His true devotees. O human beings! Once you have tasted such gifts given directly by God, all of your personal desires will be permanently fulfilled and no voids left in your life.

(For God's attributes, also see mantras #1,2,5,8,10,20,28,31 and To understand the relationship of God, Souls and Prakriti/Universe, also see mantra # 5)

To Be Continue....

- Acharya Gyaneshwarya

आओ ! संस्कृत सीखें पूर्वकालिक कत्वा व ल्यप् प्रत्यय- 41

गतांक से आगे....

वाक्य में दो क्रियाओं का समानकर्ता होने पर के होने पर पूर्वकाल वाली क्रिया से कत्वा प्रत्यय होता है। यदि उस धातु से पूर्व अव्यय या उपसर्ग आदि हों तो कत्वा के स्थान पर ल्यप् हो जाता है। इससे अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं आता व दोनों ही स्थितियों में शब्द के अव्यय होने से रुप नहीं चलते।

उदाहरण- यज्ञदत: भुक्त्वा विद्यालयं गच्छति। यहां खाना व जाना दो क्रियाएं हो रही हैं जिनका एक ही कर्ता यज्ञदत्त है अत: पूर्वकाल में घटित होने वाली भुज्(खाना) क्रिया में कत्वा प्रत्यय होकर वाक्य का अर्थ हुआ ''यज्ञदत्त खाकर विद्यालय जाता है''।

2. शिष्य: स्नात्वा पाठं पठति।
शिष्य स्नान करके पाठ पढता है।

3. स: मित्रं दृष्ट्वा ग्रामाद् आयाति।
वह मित्र को देखकर गांव से आता है।

4. कृषक: दुग्धं दुग्ध्वा क्षेत्रं प्रति गच्छति।
किसान दूध को दुहकर खेत की ओर जाता है।

5. बालक: वाक्यम् उक्त्वा लिखति।
बालक वाक्य को बोल कर लिखता है।

6. परीक्षाम् उत्तीर्य रमा मोदते ।
परीक्षा को उत्तीर्ण करके रमा प्रसन्न होती है।

7. पुत्रम् आहूय पिता पृष्टवान्।
पुत्र को बुलाकर पिता ने पूछा।

8. देवदत्त: वेदम् अधीत्य गृहस्थी भवति।
देवदत्त वेद को पढकर घर वाला बनता है।

9. वणिक् धनं संगृह्य दानं ददाति।
व्यापारी धन को इक्टठा करके दान देता है।

10. मयूर: प्रनृत्य मन: हरति।
मोर नाचकर मन को हरता है।

- क्रमश: -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

पृष्ठ 4 का शेष

19वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय.....

इसके आशातीत परिणाम आएंगे ऐसी मुझे पूर्ण आशा है। इस प्रकार के आयोजन जाति-पाति के भेदभाव को मिटाने में आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन उल्लेखनीय भूमिका निभा रहे हैं।'

परिचय सम्मेलन के पूर्व इस संवाद दाता को अपने विचार प्रकट करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने परस्पर समान गुण कर्म और स्वभाव के अनुसार विवाह करने का उल्लेख किया है। आर्य समाज के ये परिचय सम्मेलन तदनुरूप लक्ष्य की पूर्ति में सहायक होंगे।

सम्मेलन का शुभारम्भ ईश्वर स्तुति प्रार्थना, उपासना के मन्त्रोच्चारण के साथ मंच पर उपस्थित सभी पदाधिकारियों अतिथितियों सर्वश्री महाशय धर्मपाल चेयरमैन एम डी एच, जगदीश चन्द्र गुलाटी मंत्री, कृष्ण कुमार बवेजा मंत्री, यशपाल आर्य कोषाध्यक्ष, धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, अर्जुन देव चड्ढा, प्रधान कोटा आर्य प्रतिनिधि सभा, राम चरण आर्य, प्रधान महावीर नगर कोटा, सतीश चढ्ढा महामंत्री एवं एस.पी. सिंह मंत्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, शिव कुमार मदान प्रधान आर्य समाज पंखा रोड, जनकपुरी, हर्षप्रिय आर्य जे.वी.एम. ग्रुप, सर्वश्रीमती वीणा आर्या, विभा आर्या द्वारा सामूहिक रूप से दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात् आर्य समाज जनकपुरी-बी-2 के पूर्व प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार खट्टर एवं राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने अतिथियों का स्वागत केसरिया पटका व राजस्थानी पगड़ी पहना कर किया।

सम्मेलन में राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा जी ने बताया कि इस सम्मेलन में भारी संख्या में युवक-युवतियों ने अपना पंजीकरण कराया। पंजीकृत युवक-युवतियों की फोटोयुक्त बायोडाटा विवरणिका पुस्तक का प्रकाशन किया गया जो कार्यक्रम स्थल पर सभी को प्रदान की गई। पूर्व पंजीकृत युवक-युवतियों के साथ-साथ तत्काल पंजीयन की भी व्यवस्था की गई थी जो पूरे कार्यक्रम तक चलती रही। तत्काल पंजीयन में अनेकों युवक-युवतियों ने पंजीयन कराया। दिल्ली क्षेत्र के संयोजक श्री एस.पी. सिंह ने बताया कि कार्यक्रम स्थल पर पूछताछ, तत्काल रजिस्ट्रेशन, विवरणिका, पुस्तक वितरण, युवक-युवती वैज वितरण आदि के अलग-अलग काउण्टर लगाए गए थे, इन सभी काउण्टरों की पूरी जिम्मेदारी कु. हविशा आर्या, मनोज नेगी, अशोक कुमार, अरुण प्रकाश, बिपिन भल्ला एवं श्रीमती विभा ने संभाल रखी थी। सम्मेलन में युवक-युवतियों ने मंच पर आकर पूरे आत्मविश्वास के साथ परिचय दिया। उन्हें कैसा जीवन साथी चाहिए इस बारे में अपने विचार प्रकट किये। कुछ अभिभावकों ने भी अपने पुत्र-पुत्रियों के बायोडाटा प्रस्तुत किये। रिश्तों की वार्ता को अगे बढ़ाने व सहयोग के लिए एक मेल मिलाप समिति बनाई गई जिसके संयोजक श्री सतीश चड्ढा महामंत्री एवं श्री ओम प्रकाश आर्य उप प्रधान के. आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली राज्य ने आपसी मेल-मिलाप कराने में अपना भरपूर सहयोग दिया।

दिल्ली में बाहर से आने वाले युवक-युवतियों के अभिभावक एक दिन पूर्व ही दिल्ली पहुंच गए थे जिनके ठहरने, चाय-नाश्ते व भोजन की व्यवस्था आर्य समाज जनकपुरी बी-2 ब्लॉक द्वारा की गई। कार्यक्रम का संचालन राजष्ट्रीय संयोजक अर्जुन देव चड्ढा, एस.पी. सिंह, हर्ष प्रिय आर्य, विभा आर्या, वीणा आर्या जी ने किया। आर्य समाज जनकपुरी बी-2 ब्लॉक में विगत 36 वर्षों से सक्रिय भूमिका निभाने वाले पूर्व प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार खट्टर प्रधान, श्री कृष्ण कुमार बबेजा प्रधान, श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी मंत्री एवं यशपाल जी कोषाध्यक्ष ने कार्यक्रम पश्चात् सभी का धन्यवाद किया व आर्य समाज बी-2 ब्लॉक जनकपुरी की ओर से सहभोज की व्यवस्था की गई। यदि भूलवश किसी महानुभाव का नाम प्रकाशित होने से रह गया हो तो क्षमाप्रार्थी हैं।

- अर्जुन देव चड्ढा,
राष्ट्रीय संयोजक

तिथियां परिवर्तित

आर्यसमाज जहांगीरपुरी के नए भवन का उद्घाटन

यज्ञ: प्रात: 9:30 बजे **उद्घाटन** - प्रात: 11 बजे **ऋषि लंगर:** 1 बजे

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं समस्त आर्य जनों की सूचनार्थ है कि आप सभी के सहयोग से आर्यसमाज जहांगीर पुरी नई दिल्ली के लिए क्रय किए गए भवन - के.- 1046 का उद्घाटन समारोह किन्हीं कारणों से 4 फरवरी से स्थगित होकर **रविवार 11 मार्च, 2018** को निश्चित किया गया है। कार्यक्रम प्रात: 9:30 बजे यज्ञ के साथ आरम्भ होगा।

अत: आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं अपना सहयोग प्रदान करें। जल्दी ही सभा के निर्देशन में आर्यसमाज के इस नए भवन का निर्माण कार्य आरम्भ किया जाएगा।

- विनय आर्य, सभा महामन्त्री **रामभरोसे आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज**

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन
1 अप्रैल, 2018 को मनाएं अधिकतम संख्या दिवस

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस दिन अपनी-अपनी आर्यसमाज के यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग में अवश्य ही सम्मिलित हों। समस्त आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि इस हेतु अपनी तैयारियां करें। अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को सूचित करें कि इस दिन के सत्संग में सब कार्य छोड़कर अवश्य सम्मिलित हों। इस सम्बन्ध में सभा द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश शीघ्र जारी किए जाएंगे। सभा की ओर से सब आर्यसमाजों अपेक्षित सहयोग भी उपलब्ध कराया जाएगा। सबसे अधिक उपस्थिति वाली आर्यसमाज को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। इस दिन को अपनी आर्यसमाज का ऐतिहासिक दिन बनाएं। अत: अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति पंजीका के उस दिन की उपस्थिति की फोटो प्रति अपने पत्र के साथ सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भिजवाना न भूलें। - ***विनय आर्य, महामन्त्री***

संगीतमय वेद कथा एवं सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज, सागरपुर, नई दिल्ली एवं महिला सत्संग समिति मोहन नगर सागरपुर द्वारा संगीतमय वेद कथा एवं सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन 12 से 18 फरवरी 2018 तक नगरवन पार्क सागरपुर में दोपहर 2 से 6 बजे किया जा रहा है। वेद कथा एवं यज्ञ ब्रह्मा पं. देशराज 'सत्येच्छु' एवं वेद पाठ गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा किया जाएगा।

- सुखबीर सिंह, प्रधान

आर्यसमाज मायापुरी नई दिल्ली द्वारा 28वां साप्ताहिक यज्ञ सम्पन्न

4 फरवरी, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया में 28वां रविवारीय साप्ताहिक यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आर्य समाज भवन के अभाव में कार्यक्रम खुले पार्क में आयोजित किया जाता है। 30 जुलाई को यज्ञ की शुरुआत के साथ नई आर्य समाज की स्थापना हुई थी। हर्ष का विषय यह है कि प्रारम्भ से ही यहां के बच्चों ने यज्ञ में अपनी विशेष रुचि दिखाई। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्य प्रकाश शास्त्री जी थे कार्यक्रम में सविता अग्रवाल, कर्मयोगी मिगलानी अपनी विशेष सेवाएं अर्पित करते हैं। सभी से निवेदन है कि आर्य समाज परिवार जो मायापुरी से सम्बन्धित हैं उनका सम्पर्क सूत्र श्री रजनीश वर्मा आर्य समाज के संस्थापक एवं प्रधान को भिजवाने की कृपा करें। ***- सुनीता बुग्गा, मन्त्री***

प्रवेश सूचना

गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर में कक्षा 6, 7, 8, 9, 10वीं और बी.ए. प्रथम वर्ष के नवीन छात्रों की प्रवेश परीक्षा 15 अप्रैल 2018 प्रात: 10 बजे गुरुकुल में आयोजित होगी।आवेदक अपना आवेदन पत्र 10 अप्रैल तक जमा करायें। आवेदन पत्र डाक द्वारा भी मंगाए जा सकते हैं। उत्तीर्ण छात्रों का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा। सम्पूर्ण संस्कृतमय वातावरण के साथ-साथ उत्तम पुस्तकालय एवं मल्टीमीडिया की विशेष व्यवस्था है। सम्पर्क करें - अधिष्ठाता-09888764311,08544878541

-ध्रुव कुमार मित्तल, प्रधान

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर राष्ट्रीय विचार संगोष्ठी

11 फरवरी, 2018 समय : 2 से 5 बजे
स्थान : जे.एन.यू. कंवेशन सैन्टर-1, जे. एन.यू.,नई दिल्ली
मुख्य वक्ता - डॉ. वेद प्रताप वैदिक
अध्यक्षता : स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती

निवेदक - स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

प्रेरक प्रसंग
वे स्वर्ग में झाड़ू लगाया करते थे

प्रिंसिपल लाला देवीचन्दजी मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण करके गुरदासपुर के राजकीय विद्यालय की नवम् कक्षा में प्रविष्ट हुए। वे अपने कस्बे बहरामपुर (दीनानगर के पास) में ही आर्यसमाज के सम्पर्क में आ चुके थे। जब गुरदासपुर आये तो मास्टर मुरलीधरजी उनको गणित पढ़ाया करते थे। इन मास्टर मुरलीधरजी ने ऋषि के दर्शन किये थे। वे आर्यसमाज की प्रथम पीढ़ी के एक विद्वान् नेता थे।

मास्टरजी अपने छात्रों को ऋषि के तेज, ब्रह्मचर्य-बल, योग्यता और ईश्वर-विश्वास की घटनाएँ सुनाया करते थे। लाला देवीचन्दजी पर आर्यसमाज का और रंग चढ़ा। मास्टरजी ने आपको यह कार्य सौंपा कि रविवार को सबसे पहले जाकर समाज-मन्दिर में झाड़ू लगाया करें। जब कभी लाला देवीचन्द कुछ देर से आर्यसमाज-मन्दिर में पहुँचते तो मास्टर मुरलीधर स्वयं ही समगर्व आर्यसमाज मन्दिर में झाड़ू देने का कार्य किया करते थे।

इसी धर्मभाव से वे लोग ऊँचे उठे और इन लोगों की लग्न और तड़प से यह समाज फूला-फला।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

194वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर भव्य भजन संध्या

12 फरवरी, 2018 सायं : 6:30 बजे से
स्थान : महर्षि दयानन्द वाटिका, विकासपुरी डी ब्लाक, नई दिल्ली
मुख्य वक्ता - स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

- हरिश कालरा, प्रधान

वेद-वेदांगों का अध्यापन

'पंडित ऋषिराम आर्योपदेशक महाविद्यालय' (वेद गुरुकुलम्, करलमन्ना (जिला), पालक्काड़ (केरल) में 15 अप्रैल 2018 से यथाक्रम शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष आदि शास्त्रों के अध्यापनपूर्वक वेद का अध्यापन अनूचान पद्धति से प्रारम्भ हो रहा है। उच्च माध्यमिक (12वीं कक्षा) अथवा तत्समकक्ष योग्यता रखने वाले विद्यार्थी इसमें प्रविष्ट हो सकेंगे। आवासीय व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी। स्थान सीमित हैं! अंतिम स्वीकृति एक माह निरीक्षण के बाद ही दी जा सकेगी। संपर्क सूत्र :- अधिष्ठाता- 9562529095, 9446017440, ईमेल- aryopadeshakvidyalaykerala@gmail.com

शोक समचार
श्री अशोक कुमार गुप्ता को भ्रातृशोक

आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन के प्रधान श्री अशोक कुमार गुप्ता जी के ज्येष्ठ भ्राता एवं आर्यसमाज के पूर्व प्रधान व आर्यसमाज द्वारा संचालित महर्षि चरक चेरिटेबल सोसायटी के प्रधान श्री महेन्द्र कुमार गुप्ता जी का 28 जनवरी, 2018 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 8 फरवरी को पंजाबी बाग कल्ब लॉन नं. 2 में सम्पन्न हुई।

माता सुशीला देवी रल्ली का निधन

आर्यसमाज आदर्श नगर से जुड़े श्री योगराज रल्ली जी की धर्मपत्नी श्रीमती श्रीमती सुशीला देवी रल्ली जी का निधन हो गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 5 फरवरी को चिन्मय मिशन सभागार लोदी रोड में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

आर्यसमाज अशोक विहार-1 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 194वां जन्मोत्सव

18 फरवरी, 2018 यज्ञ प्रात: 8 बजे
ब्रह्मा : प. सतीश चन्द्र शास्त्री
वक्ता - आचार्य उर्षबुध जी
भजन : श्रीमती कविता आर्या
मुख्य अतिथि : श्री विनय आर्य

- प्रेम कुमार सचदेवा, पधान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में समस्त आर्यसमाजों के सहयोग से
आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

फाल्गुन पूर्णिमा विक्रमी सम्वत् 2074 तद्नुसार वीरवार 1 मार्च, 2018 सायं 3-30 से 7-15 बजे

स्थान : रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल,

रांजाबाजार, कनॉट प्लेस (स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे), शिवाजी स्टेडियम के पास, नई दिल्ली-1

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 5 फरवरी, 2018 से रविवार 11 फरवरी, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 8/9 फरवरी, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 7 फरवरी, 2018

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्य समाज की रीति-नीति, पूजा- पद्धति, मान्यताएं, दर्शन, चिन्तन आदि अन्य मत-मतान्तरों व विचारधाराओं से अलग है। इसके मूल आधार में सत्य, धर्म, कर्म एवं बुद्धि है। इसमें अंधविश्वास, पाखण्ड, झूठ, मन्त्र-तन्त्र, जादू-टोना एवं रूढ़िवादिता आदि नहीं है। यह तो सत्य- सनातन वैदिक परम्परा का ही प्रचारक और प्रसारक रहा है। इसी कारण आर्य समाज पन्थ, मजहब, सम्प्रदाय आदि नहीं है। यह तो एक जीवन्त क्रांति है। आन्दोलन है। जीवन पद्धति है। सुधारक-चिन्तन है। इसमें किसी देवदूत, पैगम्बर और अवतार का स्थान नहीं है। इसमें एकेश्वरवाद की पूजा है। परमात्मा एक है। वह तीनों कालों में विद्यमान रहता है। वह जन्म-मरण- सुख-दु:ख आदि सांसारिक बातों से पृथक् है। उसके गुण-कर्म स्वभाव से असंख्य नाम हैं। वह गुण-कर्म-स्वभाव के कारण सविता, विष्णु, रुद्र, गणेश आदि अनेक नामक हैं। जैसे व्यक्ति एक होता हे वह किसी का पुत्र है, किसी का पिता है, किसी का पति है, तो किसी का भाई है। गुण-कर्म स्वभाव से उसके कई रूप हैं। ऐसे ही परमात्मा भी अनेक रूपों वाला है। उसका एक नाम शिव भी है। शिव का अर्थ है जो सदैव मङ्गल और कल्याण करता है। ये दोनों गुण उस परमात्मा में सदैव रहते हैं। अत: वह घट-घट व्यापी परमात्मा ही सच्चा शिव है। उसी की पूजा-उपासना और साधना करनी चाहिए।

आज सत्य और इतिहास ओझल हो गया है। अन्धविश्वास और रूढ़ियों की पूजा होने लगी है। धर्मग्रन्थ, पुराण एवं इतिहास साक्षी है-कि प्राचीन काल में यहां नागजाति का राज्य रहा है। नागजाति के गणपति शंकर जी थे। नागजाति शिव जी का चिह्न अपने मुकुट पर लगाती थी। नागजाति के गणपति शंकर जी थे। नागजाति शिव जी का चिह्न अपने मुकुट पर लगाती थी। नागजाति ने राष्ट्र का सर्वोच्च रक्षक शिव जी को मान कर उनके नाम के अनेक मन्दिर स्थापित किये थे। शिव जी का सम्बन्ध नागजाति से था। आज हमने नाग का अर्थ सर्प करके शिव जी के गले में सर्पो की माला पहना दी। शिव जी का लिंग अर्थात् चिह्न त्रिशुल था। नागजाति के त्रिशूल रूपी चिह्न को अपने राज्य की ध्वजा घोषित किया था। आज भी प्रत्येक राष्ट्र की अपनी अलग-अलग ध्वजाएं हैं। हमने अर्थ का अनर्थ करके लिंग का अर्थ शिश्न लगाया। जोकि तर्क संगत नहीं है। यह इतिहास के अनुसन्धान का विषय है। आर्य समाज ऐसे अनेक सत्य तथ्यों तक सबको बताना और पहुंचाना चाहता है।

आर्य समाज राष्ट्र, समाज, जाति और जीवन में व्याप्त अनेक बुराईयों, सामाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वासों एवं पाखण्डों को हटाना और मिटाना चाहता है। आज मन्दिर अपने वास्तविक स्वरूप से हटते जा रहे हैं। जो स्थान धार्मिक, सात्विक, सर्वहित कारी, शान्त, प्रेम, दया, सेवा आदि के स्थल होने चाहिए। वहां हिंसा लूट-पाट, अधार्मिकता, लड़ाई झगड़े आदि हो रहे हैं। अनहोनी घटनाएं हो रही हैं। मानव की प्रवृत्तियां पशुता की ओर जा रही है। मानवीय मूल्य बड़ी तेजी से बदले और तोड़े जा रहे हैं। ऐसे विकट समय में आवश्यकता है हिन्दू जाति को अपने गौरवमय इतिहास से संस्कृति से, आदर्श ग्रन्थों से, महापुरुषों से, इतिहास से और महान् परम्पराओं से शिक्षा तथा प्रेरणा लेनी चाहिए।

महर्षि के जीवन में शिवरात्रि की रात सत्य की खोज और जीवन-परिवर्तन का कारण बन कर आई थी। इस से पूर्व कितनी शिवरात्रियां आई होंगी? आ भी आ रही हैं? कहीं कोई परिवर्तन नजर नहीं आता है। कोई भी मूल सत्य तक नहीं पहुंच सका है। यह उस महाभाग की गहन चेतना और पकड़ का ही परिणाम है कि उसने शंकर के मूल को खोज निकाला। ऋषि महान् शिक्षक और उद्धारक थे। उन्होंने संसार के लोगों को अन्धकार से प्रकाश की ओर असत्य से सत्य की ओर अधर्म से धर्म की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर आने का मार्ग दिखाया। वे भारत को वैदिक कालीन गौरव, आदर्श और सम्मान में देखने का स्वप्न लेकर आए थे। वे मनु के इस कथन को साकार करना चाहते थे-

एतद्देशप्रभूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

प्रतिष्ठा में,

समग्र वसुधा के लोगो! भारतभूमि की शरण में आओ। यहां से जीवन और चरित्र के लिए उन्नत शिक्षा ग्रहण करो। इसी में तुम्हारा कल्याण सम्भव है।

उस महायोगी का वेद, धर्म, संस्कृति, शिक्षा, नारी उद्धार, शुद्धि एवं राष्ट्रीय एकता आदि प्रत्येक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण एवं स्मरणीय योगदान रहा है। उन्होंने जीवन में कभी भी गलत बातों के लिए समझौता नहीं किया था। वे सत्य के पोषक थे। सत्यमय जीवन जिया। सत्य के लिए ही हंसते-हंसते जहर पी गए। कवि के शब्दों में -

सदियों तक इतिहास समझ न सकेगा।
तुम मानव थे या मानवता के महाकाव्य।।

- बी.जे.-29, शालीमार बाग, दिल्ली-110088

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह